श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

अप्रैल - तृतीय
अंक - 7

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address Here

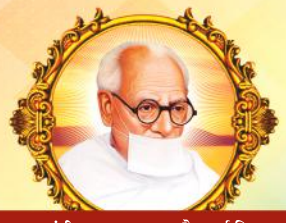

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

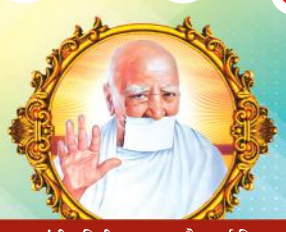

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

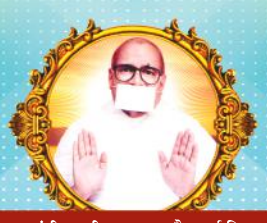

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

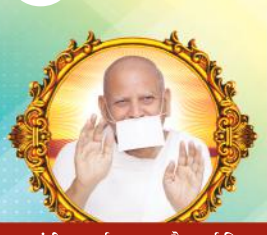

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष शुभारम्भ - अक्षय तृतीया (1952 - 2026)

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

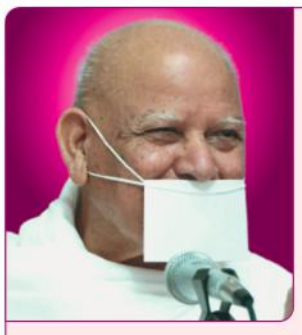

आनंद की चाह

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

जैन शास्त्रों में धर्म के दो प्रमुख रूप माने गए हैं, पहला विचार और दूसरा आचार। हमारे विचार जैसे होंगे आचरण में उनकी झलक अवश्य ही आएगी। शुद्ध विचार और शुद्ध आचार दोनों का अन्यान्योभाव सम्बन्ध है। विचारों की निर्माण प्रक्रिया में मुख्य रूप से ज्ञान और दर्शन का सहयोग आवश्यक है। सम्यक् दर्शन होगा तो सम्यक् ज्ञान अवश्य होगा। जहाँ सम्यक् ज्ञान है वहाँ सम्यक दर्शन का होना भी अनिवार्य है। इन दोनों की शुद्ध स्थिति में चरित्र अपने आप आचरित होने लगता है।

आपने देखा होगा सड़क पर मोटर चल रही है। क्या वह अपने आप चल रही है? यह तो एक स्पष्ट सत्य है कि उसे ड्राइवर चला रहा है। उसी के इंगित पर मोटर गन्तव्य की ओर बढ़ी चली जा रही है। हमारे जीवन की गाड़ी भी चल रही है। युगों-युगों से गतिशील है। उसकी गतिशीलता कभी समाप्त नहीं होती। क्योंकि उसका ड्राइवर आत्मा है। आत्मा कभी मरता नहीं। व्यवहार में हम कह देते हैं कि वह मर गया। वस्तुतः ऐसा नहीं है। ड्राइवर गाड़ी से बाहर निकला और गाड़ी की तथा गाड़ी के यंत्रों की क्रियाएं स्वतः ही शांत हो जाती हैं। दर्शन शास्त्र की मुख्य दृष्टि आत्मा की ओर रही है। क्योंकि इसके अतिरिक्त संसार में जो भी कुछ है सब अनात्म है। अनात्म अर्थात् जीवन अपने आप कोई क्रिया नहीं कर सकता। उसे कर्ता की आवश्यकता रहती ही है। एक दिन एक जिज्ञासु ने पूछा कि मुनि जी, कर्म भी तो अजीव है। जब अजीव कुछ नहीं कर सकता, तो अजीव कर्मों ने हमारे जीवात्मा को कैसे जकड़ लिया है। प्रश्न महत्वपूर्ण था। महत्वपूर्ण का उत्तर भी महत्वपूर्ण होना चाहिए। उस समय मुझे प्राचीन सन्त की दो पंक्तियाँ याद आ गईं। उनमें पहली पंक्ति जिज्ञासु भाई का प्रश्न स्पष्ट कर रही थी -

कर्म बली रे भाई कर्म बली ।
कर्मों के आगे न काहु की चली ।।

इसमें प्रश्नकर्ता जिज्ञासु की भाँति कर्मों की प्रधानता स्वीकार की गई है। ऐसा लगता है मानो चेतन अपने सब प्रयत्नों में पराजित हो गया है। उसी सन्त के मुखारविन्द से अगली पंक्ति निकल पड़ी -

जीव बली रे भाई जीव बली ।
कर्मों को मार के मुक्ति ले ली ।।

अब तो आप समझ गए होंगे। जीव और अजीव, अथवा आत्मा और कर्म इन दोनों में कौन बलवान है? विजेता सदा ही बलवान रहा है। यदि कर्म बलवान होते तो आज तक कोई भी आत्मा मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता था। भूतकाल में अनन्त जीवों ने मोक्ष प्राप्त किया है। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने अपने कर्मों को पराजित किया। तभी तो उनका कर्मों से छुटकारा हो सका। (साभार - पुस्तक "पढमं नाणं")

अध्यक्षीय

संगठन सशक्त बने - सहभागिता ही हमारी शक्ति

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाज बंधुओं,

यह बताते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि रविवार, दिनांक 3 मई 2026 को प्रातः 11:00 बजे से श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं साधारण सभा का महत्वपूर्ण आयोजन प्रस्तावित है। यह बैठक संगठन की दिशा, दशा और भावी योजनाओं के निर्धारण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। किसी भी संस्था की सुदृढ़ता केवल उसके पदाधिकारियों से नहीं, बल्कि उससे जुड़े प्रत्येक सदस्य की सक्रिय सहभागिता से निर्धारित होती है। संगठन तभी सशक्त बनता है जब उसके प्रत्येक अंग में समर्पण, उत्तरदायित्व और सहभागिता की भावना जागृत हो। यह सभा केवल औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि विचार-विमर्श, आत्ममंथन और सामूहिक संकल्प का सशक्त मंच है।

आज समय की आवश्यकता है कि हम संगठन को केवल नाम या पद तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने कर्तव्य और दायित्व के रूप में स्वीकार करें। जब प्रत्येक सदस्य यह अनुभव करेगा कि संगठन उसकी अपनी पहचान और शक्ति है, तभी हम एक सशक्त, समन्वित और प्रभावी व्यवस्था का निर्माण कर पाएँगे।

हमारे सामने अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं संगठनात्मक चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान सामूहिक विचार और एकजुट प्रयासों से ही संभव है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम सभी अपने-अपने क्षेत्र के अनुभव, सुझाव और संकल्प लेकर इस सभा में उपस्थित हों, ताकि संगठन की भावी योजनाएँ अधिक प्रभावी और सर्वसमावेशी बन सकें।

मैं, विशेष रूप से समस्त पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों, प्रांतीय प्रतिनिधियों तथा संगठन से जुड़े सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं से विनम्र आग्रह करता हूँ कि वे इस महत्वपूर्ण सभा में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें। आपकी सहभागिता ही इस आयोजन की सफलता और संगठन की शक्ति का आधार है। आइए, हम सब मिलकर इस अवसर को केवल एक बैठक तक सीमित न रखते हुए इसे संगठन के नवउत्थान और सुदृढ़ीकरण का माध्यम बनाएं। सक्रिय सहभागिता, सकारात्मक सोच और समर्पित भावना के साथ हम संगठन को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का संकल्प लें।

आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति की अपेक्षा एवं अग्रिम शुभकामनाओं सहित।

सम्पादकीय

जैन अस्मिता, अधिकार का संरक्षण और 'जैन कल्याण बोर्ड' की आवश्यकता

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

हाल ही में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ जैन समाज के विमर्श के केंद्र में हैं। एक ओर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव द्वारा भोपाल में (21 सितंबर 2024) "जैन कल्याण बोर्ड" के गठन की घोषणा-जो अब तक मूर्त रूप नहीं ले सकी है। दूसरी ओर महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री मंगल प्रभात लोढ़ा का यह बयान कि जैन समाज को अल्पसंख्यक दर्जे से बाहर आने पर विचार करना चाहिए। ये दोनों घटनाएँ केवल प्रशासनिक या राजनीतिक बयान नहीं हैं, बल्कि जैन समाज की पहचान, अधिकारों और भविष्य की दिशा से जुड़े गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं।

सबसे पहले, "जैन कल्याण बोर्ड" की अवधारणा पर विचार करना आवश्यक है। जैन समाज भारत की प्राचीनतम आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है, जिसकी अपनी विशिष्ट आचार-संहिता, दर्शन, तीर्थ परंपरा और मुनि-संघ व्यवस्था है। इसके बावजूद आज अनेक जैन तीर्थ अतिक्रमण, स्वरूप परिवर्तन और प्रशासनिक उपेक्षा जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। ऐसे में एक सशक्त "जैन कल्याण बोर्ड"-चाहे वह केंद्र स्तर पर हो या राज्यों में-समाज के धार्मिक स्थलों की सुरक्षा, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, साधु-संतों की व्यवस्था और सामाजिक संस्थाओं के समन्वय के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मध्य प्रदेश में की गई घोषणा यदि शीघ्र क्रियान्वित होती है, तो यह अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकती है। दुर्भाग्य से, घोषणा के बाद भी ठोस कदम न उठाया जाना यह दर्शाता है कि सरकारों की प्राथमिकताओं में अभी इस विषय को अपेक्षित स्थान नहीं मिला है। जैन समाज को भी इस दिशा में संगठित, तथ्यपूर्ण और संवैधानिक तरीके से अपनी माँग को आगे बढ़ाना होगा।

अब बात करते हैं श्री मंगल प्रभात लोढ़ा के बयान की। उनका यह कहना कि जैन धर्म "हिंदू संस्कृति का हिस्सा" है और जैन समाज को अल्पसंख्यक दर्जे से बाहर आने पर विचार करना चाहिए-यह एक जटिल और संवेदनशील विषय है। यह सत्य है कि भारतीय संस्कृति बहुलतावादी है और विभिन्न परंपराएँ एक-दूसरे से संवाद करती रही हैं। जैन धर्म का भारतीय सांस्कृतिक धारा से गहरा संबंध रहा है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उसकी स्वतंत्र धार्मिक पहचान को नकार दिया जाए।

भारत के संविधान ने जैन धर्म को एक स्वतंत्र अल्पसंख्यक धर्म के रूप में मान्यता दी है। यह दर्जा केवल प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि इसके साथ शिक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण, संस्थागत स्वायत्तता (शेष पृष्ठ 2 में)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') और धार्मिक अधिकारों से जुड़े अनेक संवैधानिक संरक्षण भी जुड़े हैं। यदि यह दर्जा समाप्त होता है, तो जैन समाज इन अधिकारों से वंचित हो सकता है-जो उसके अस्तित्व और विकास दोनों के लिए हानिकारक होगा। यहाँ यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि "समन्वय" और "विलय" दो भिन्न अवधारणाएँ हैं।

जैन समाज ने सदैव सह-अस्तित्व, अहिंसा और अनेकांतवाद का संदेश दिया है, लेकिन उसने अपनी स्वतंत्र पहचान को बनाए रखते हुए ही यह समन्वय किया है। इसलिए किसी भी प्रकार का ऐसा प्रयास, जो जैन धर्म को किसी अन्य धर्म में विलीन करने की दिशा में जाता हो, समाज के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज के प्रबुद्ध वर्ग, संत-मुनि, सामाजिक संगठन और जनप्रतिनिधि मिलकर एक संतुलित और दूरदर्शी रणनीति बनाएं। श्री लोढ़ा जैसे प्रभावशाली नेता यदि वास्तव में जैन समाज के हितैषी हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे केंद्र और राज्य सरकारों के समक्ष "केंद्रीय जैन बोर्ड" तथा सभी राज्यों में "जैन कल्याण बोर्ड" के गठन की ठोस माँग रखें। साथ ही, जैन धार्मिक स्थलों पर हो रहे अतिक्रमण, अवैध कब्जों और स्वरूप परिवर्तन के विरुद्ध सख्त कार्रवाई सुनिश्चित कराने में अग्रणी भूमिका निभाएं। जैन समाज को भी केवल प्रतिक्रियात्मक रुख अपनाने के बजाय सकारात्मक और संगठित प्रयास करने होंगे। कानूनी अधिकारों की रक्षा, सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और सामाजिक एकता-इन तीनों स्तंभों पर ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

अंततः, यह कहना उचित होगा कि जैन धर्म की स्वतंत्र पहचान, उसके संवैधानिक अधिकार और उसकी सांस्कृतिक विरासत-ये तीनों अविभाज्य हैं। किसी भी प्रकार का ऐसा विमर्श, जो इनको कमजोर करता हो, उस पर गंभीरता से पुनर्विचार आवश्यक है। साथ ही, सरकारों को भी चाहिए कि वे घोषणाओं से आगे बढ़कर ठोस कार्यवाही करें, ताकि जैन समाज का विश्वास बना रहे और उसकी अमूल्य धरोहर सुरक्षित रह सके।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

कुंवारेपन का विस्फोट, समाज अंधी दौड़ में कहाँ पहुँच रहा है ?

अब वक्त आ गया है कि चीजों को मीठे शब्दों में कहना बंद किया जाए। दुनिया जिस आजादी की जय-जयकार कर रही है, वही आजादी धीरे-धीरे परिवार, रिश्तों और सामाजिक संतुलन, सब कुछ निगलने लगी है। अंतर्राष्ट्रीय सर्वे कहता है कि आने वाले कुछ वर्षों में युवतियों में 45% तक विवाह से दूरी बना सकती हैं। पहली नजर में यह प्रगति लगती है, पर असल में यह भविष्य के लिए एक टाइम-बम है।

1. कैरियर, पैसे और अकेलापन... यह कैसी प्रगति? : आज की बेटी डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, उद्यमी, सब बन रही हैं। बहुत अच्छा, शानदार। पर क्या कैरियर पूरा जीवन है? पैसा साथी नहीं बनता। पद वृद्धावस्था में हाथ नहीं पकड़ता। मोबाइल और लैपटॉप बुढ़ापे में बात नहीं करते। लेकिन समाज को इस सच्चाई से फर्क नहीं पड़ता, सबको दौड़ लगानी है... बस लगानी है।

2. परिवार ढ़ह रहे हैं... कोई देख भी रहा है? : कुँवारे लड़के बढ़ रहे हैं, अविवाहित युवतियाँ बढ़ रही हैं, जनसंख्या गिर रही है, और अकेलेपन उद्योग (Counsellor, Therapy, Depression Pills) फल-फूल रहा है। पर हम फिर भी कहते हैं, सब ठीक है, यह आधुनिकता है। यह आधुनिकता नहीं, धीमी मौत है, परिवार, समाज और मानवीय संबंधों की।

3. सर्वाधिक खतरनाक स्थिति : आज माता-पिता रिश्ता ढूंढते हैं, पर लड़की कहती है, अभी नहीं। फिर अभी नहीं धीरे-धीरे कभी नहीं में बदल जाता है और जब एहसास होता है तो मेडिकल रिपोर्ट सामने होती है, हार्मोनल इश्यू, कंसिव न होना, मानसिक तनाव, अकेलापन। पर तब कौन जिम्मेदार? कोई नहीं, क्योंकि फैसला स्वतंत्रता का था।

4. समाज के जिम्मेदार लोग चुप क्यों हैं? : क्योंकि सच्चाई बोलने से उन्हें आधुनिकता-विरोधी कहलाने का डर है। पर सच्चाई यह है कि अगर 21-25 की उपयुक्त उम्र में विवाह नहीं हुए तो समाज जल्द ही दिसंबर की ठंडी रात जैसा सूना हो जाएगा।

5. अंतिम बात : प्रगति वो नहीं जो हमें अकेला कर दे। अगर हमारा भविष्य कुंवारा, अकेला और भावहीन होने वाला है, तो समाज के लिए यह गर्व की नहीं, खतरे की घंटी है।

(प्रस्तुति-सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली)

कथा-कहानी — योगिराज की कहानियाँ - प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

नाम और काम

बुद्ध के पाँच सौ शिष्य तक्षशिला में ठहरे थे। सभी अपनी साधना में दत्त-चित्त थे। बुद्ध ने उन्हें मौन रहने का सूत्र दिया हुआ था। सभी भिक्षुओं के नाम सुंदर और शोभास्पद थे। हर भिक्षु के नाम से भारतीय संस्कृति की सुगन्ध का परिबोध होता था। परन्तु एक भिक्षु का नाम था - पापक। वह अपने नाम की अर्थवत्ता पर खेद खिन्न हो गया।

बुद्ध के चरणों में पहुँचकर उसने निवेदन किया - भन्ते! मेरा नाम बड़ा अशोभनीय है। मैं अपना नाम बदलना चाहता हूँ। आप कोई सुन्दर सा नाम बताएँ। बुद्ध बोले - पापक! तुम स्वयं नगर में जाओ। पता लगाओ और मुझे आकर बता दो कि तुम्हें कौन-सा नाम सुन्दर लगता है। मैं तुम्हारा वही नाम रख दूँगा। भिक्षु पापक बुद्ध की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह तक्षशिला में सुंदर नाम की तलाश में चल दिया।

नगर में प्रवेश कर ही रहा था कि सामने से एक शवयात्रा आती दिखाई दी। भिक्षु ने एक शवयात्रा के साथ चल रहे आदमी से प्रश्न किया - भाई। यह मृतक कौन था? इसका क्या नाम था? उत्तर मिला - जीवक!

भिक्षु सोच में डूबा, खड़ा रहा। सोचता रहा - नाम जीवक! इसे जीना चाहिए था। जीवक भी अंततः मर जाता है। आगे बढ़ा तो एक नया दृश्य दिखाई दिया। कुछ व्यक्ति एक महिला को कोड़े से मारते हुए ले जा रहे थे। पापक खड़ा हो गया! उसने पूछा - इस अबला का क्या अपराध है। क्यों मार रहे हो इसे?

उत्तर मिला - भिक्षु! यह दासी है। अभी-अभी परपुरुष के चंगुल से छुड़ाकर लाये हैं। यह बड़ी दुराचारिणी है। पहले भी यह दुराचरण करती रही है? क्या नाम है इसका? भिक्षु! इसका नाम तो शीलवती है परन्तु दुराचरण में फँसी रहती है। भिक्षु को अच्छे नाम की तलाश में नाम की अर्थवत्ता पर गहरी सोच उत्पन्न हुई कि नाम तो 'शील' आचार दुशीलतापूर्ण है। बुद्ध से ही समाधान प्राप्त हो सकता है।

पापक आगे बढ़ा। उसे एक राह भूला पथिक मिला। भिक्षु को नमन कर उसने पूछा - भन्ते। मैं पथ भ्रमित हो गया हूँ। मुझे अमुक ग्राम का रास्ता बता दें।

भिक्षु ने पूछा - तुम्हारा नाम क्या है ? 'पंथक'। पथिक ने कहा।

पंथक भी रास्ता भूल जाता है? पापक सीधे बुद्ध के चरणों में गया और प्रणिपात कर बोला - भन्ते! मुझे नाम की सार्थकता का बोध हो चुका है। नाम मात्र-संज्ञा है। तक्षशिला में मैंने स्वयं देखा है - जीवक को मृत पाया। शीलवती को दुराचरण में अनुरक्त पाया। पंथक को राह भटकते पाया। प्रभु मेरा नाम पापक ही ठीक है। शोभा नाम की नहीं तदनुकूल गुण-कर्म में है। अशोभन नाम भी शुभाचरण में बाधक नहीं है।

बुद्ध ने कहा - पापक, जाओ अन्य भिक्षुओं की तरह तुम भी मौन रहकर ध्यान की साधना करो।

साधर्मिक की सेवा-प्रभु की सेवा

चेन्नई का उदाहरण-प्रेरणा का स्रोत

चेन्नई में जैन ट्रस्ट द्वारा निर्धन जैन परिवारों के लिए 300-400 वर्ग फिट के मकान मात्र 2000-3000 प्रति माह के न्यूनतम किराए पर उपलब्ध कराना, समाज सेवा का बहुत बड़ा कदम है। इससे परिवार को छत मिलती है और बाकी जीवन यापन के लिए वो स्वाभिमान से खुद कमाकर जीते हैं। यह सहायता, स्वावलंबन का सुंदर संगम है। यह मॉडल भारत के सभी बड़े शहरों मुंबई, दिल्ली, अहमदाबाद, इंदौर, बैंगलोर, कलकत्ता, पुणे आदि में लागू होना चाहिए।

क्यों जरूरी है ? : **1.** महानगरों में किराया असहनीय-निर्धन जैन परिवार शहर में रहकर रोजगार नहीं कर पाते क्योंकि किराया ही 15-20 हजार है।

(शेष पृष्ठ 3 में)

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

समाधान की दिशाएँ...

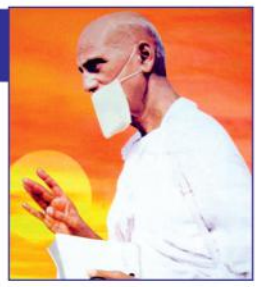

प्रश्न - एक तीर्थंकर के शासन में रहने वाले अनुयायी सम्प्रदायों के नाम से क्यों लड़ते हैं? एक बनकर क्यों नहीं रहते ?

(श्रमण-श्रेष्ठ आत्मार्थी गणाधीश पूज्य श्री उमेश मुनिजी म. 'अणु' द्वारा समाधान)

उत्तर - आज कोई सर्वज्ञ या श्रुतकेवली विद्यमान नहीं है। यदि विशिष्ट अतिशयज्ञानी विद्यमान हों तो तत्व का निर्णय सही रूप से हो सकता है। जिसने जिस परम्परा में जन्म लिया है या जिस परम्परा को अपना रखा है उसकी श्रद्धा उसी परम्परा में होगी। जो अपनी परम्परा के प्रति दृढ़ श्रद्धालु है, तो उसे उसी परम्परा की बात सही प्रतीत होती है। इसलिए अन्य परम्परा की बात को वह न तो सत्य मान सकता है, न उस पर श्रद्धा कर सकता है।

जिसे आराधना करना है, उसे तो किसी एक आराधना-पद्धति को अपनाना ही होगा। जिन्हें आराधना नहीं करना हो, वे ही इस प्रकार की बातें कर सकते हैं। जैसे कि किसी स्थान पर जाने के कई रास्ते हैं। उनमें कोई रास्ता सहज है, सरल है, लक्ष्य के अनुकूल है, तो पथिक उनमें से किसी एक रास्ते पर ही चल सकता है और उसे जो सही रास्ता प्रतीत होगा उसी पर चलेगा। एक साथ अनेक रास्तों पर नहीं चला जा सकता। इसी प्रकार सम्प्रदायें भी विभिन्न रास्ते हैं। उनमें से साधक किसी एक रास्ते पर ही चल सकता है। अतः जिसे जैसी श्रद्धा होगी, उसके अनुसार वह रास्ता अपनाएगा।

श्रद्धा और आराधना की भिन्नता ही विवाद का कारण है। श्रद्धा से विपरीत प्रतिपादन हो नहीं सकता है। अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार जब प्रतिपादन होगा, तो एक-दूसरे की श्रद्धा और आराधना के अनुसार प्रतिपादन में भिन्नता होगी। जो अपनी श्रद्धा और आराधना के प्रति प्रामाणिक है, वह दूसरों की श्रद्धा और आराधना-पद्धति को अपनी पद्धति में कैसे मिश्रित कर सकता है ?

भगवान महावीर को हुए हजारों वर्ष हो गए हैं। जब तक पूर्वधर विशिष्ट ज्ञानी रहे, तब तक सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न नहीं हुए। वीर निर्वाण से छह सौ वर्ष तक कोई भी सम्प्रदाय भेद नहीं थे। वीर निर्वाण के 600 वर्ष बाद दिगम्बर और श्वेताम्बर ये दो भेद हुए। एकान्त नग्नता का आग्रही वर्ग दिगम्बर कहलाया और इस युग में नग्नता विच्छिन्न हो गई है, क्योंकि जिनकल्प का भी विच्छेद हो गया है - ऐसी मान्यतावाला श्वेताम्बर पक्ष कहलाया। इनमें एक तीसरा मध्यस्थ पक्ष हुआ, जो सवस्त्र मुक्ति और स्त्री मुक्ति मानता था-वह पक्ष था यापनीय। उस समय भी धुरंधर विद्वान् आचार्य थे, परन्तु कोई समाधान नहीं हुआ। तीनों पक्ष अपने-अपने विचार मत के अनुसार चलते रहे। यापनीय संघ आज लुप्त हो गया है। उसे सामान्य जन जानते भी नहीं हैं। वे लुप्त हो गए, पर उन्होंने अपना सिद्धांत नहीं छोड़ा।

इसी प्रकार आगे काल-दोष से विकृतियाँ आती गई। सुधारक दल उन विकृतियों को मिटाने के लिए आगे आता गया। पक्ष भेद होते गए। उन विकृतियों के सुधार के आग्रह में से ही प्रायः जैनों में सम्प्रदाय बने हैं।

मनुष्य समझदार प्राणी है। परन्तु साधना के मार्ग में समझौता कैसे होगा ? एक पिता के पुत्र भी एक स्थान पर एक घर में नहीं रह सकते हैं तो फिर लम्बे समय से चले आ रहे सैद्धांतिक भेदों का समाधान कैसे हो सकता है ? प्रकृति का यह नियम है कि वृक्ष में से जो शाखाएँ निकल चुकी हैं, वे शाखाओं के रूप में ही रहेंगी। परस्पर मिल नहीं सकती हैं। यद्यपि यह बात समन्वयवादी को बहुत ही कटु लग सकती है। फिर भी केवल भावुकता के वश होकर हम सत्य को दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते।

हाँ, इतना हो सकता है कि एक-दूसरे के मत के सहिष्णु बनें। अपनी-अपनी पद्धति से आराधना करते हुए सत्य को समझने के लिए हमेशा तत्पर रहें। कोरी आदर्शवाद की एकता की बातें साधकजन के पल्ले नहीं पड़ सकती हैं। जो यह कहते हैं कि सम्प्रदाय में रहकर भी वे सम्प्रदाय के नहीं हैं, यह कहना उचित है क्या ? जो अपने सम्प्रदाय के प्रति आस्थावान नहीं हो, वही ऐसा कह सकता है। जिस राजनैतिक पार्टी में जिसे आस्था न हो वह उस पार्टी में रहे तो क्या वह प्रामाणिक कहलाएगा ? उस पर कोई विश्वास करेगा ? वह न अपना भला कर सकता है, न पार्टी का भला कर सकता है। इसी प्रकार सम्प्रदाय में रहकर जो सम्प्रदाय से अतीत होने की बात करते हैं, उनकी दशा भी मुझे ऐसी ही लगती है।

जिसे आराधना करना है, वह शान्ति से आराधना करे। झगड़े सिद्धांत के नहीं हैं, झगड़े तो कषाय के हैं। आराधना पद्धतियाँ जितनी निष्पाप होंगी और जितनी व्रतों के अनुकूल होंगी, उतनी ही वे भगवान के धर्म के अनुकूल होंगी। निष्पक्ष होकर अपनी-अपनी आराधना पद्धतियों की अपने आपको जाँच करनी चाहिए। झगड़े सम्प्रदाय-सम्प्रदाय में ही नहीं होते हैं, परन्तु परस्पर गुरु-शिष्य में भी होते हैं। हम सब आधे-अधूरे हैं। इसलिए हमें आगम को सामने रखते हुए निष्पाप आराधना-पद्धतियों को अपनाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। दूसरे समझे तो समझाना चाहिए, नहीं समझे तो मध्यस्थ रहना चाहिए। एकता के नाम पर आराधना को ही छोड़ देना बुद्धिमत्ता नहीं है। अपनी बौद्धिक-शक्ति की सीमा को जानकर वृथा विवाद में नहीं पड़ना चाहिए।

एकता करना एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। इस एकता के नाम पर कहीं स्वयं ही आराधना से वंचित न रह जाएँ। एकता होगी नहीं और हम धर्म करेंगे नहीं-यह तो वैसे ही होगा-जैसे न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। कदाचित् एकता हो तो भी साधक को तो चलना स्वयं है। जो आराधना के पथ पर कदम बढ़ाता है, वह कभी न कभी प्रामाणिक दृष्टि से मन्जिल पर पहुँच ही जाता है। अगर रास्ते में कुछ कमी। हो, त्रुटि हो, तो वह भी सुधरती है। बस ! चलने का लक्ष्य चाहिए। प्रामाणिकता चाहिए, मार्ग अपने आप प्राप्त होगा।

(साभार - पुस्तक "जिज्ञासा की तरंगे")

जैन मर्यादा में रचा-बसा एक आदर्श विवाह उत्सव ! अंकलेश्वर के धोका परिवार की अनुमोदना....

जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख पदाधिकारी रहे स्वर्गीय श्री अनोखीलाल जी धोका के संस्कारित सुपुत्र श्री विनोद धोका (प्रांतीय महामंत्री- जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात शाखा) के द्वारा आयोजित यह विवाह समारोह केवल एक पारिवारिक आयोजन नहीं, बल्कि जैन संस्कृति और सिद्धांतों का जीवंत उदाहरण बनकर उभरा। उनके सुपुत्र - ललित जी, विनोद जी, राजेश जी एवं राकेश जी ने अपने जीवन के प्रत्येक आयाम में जैन धर्म को अक्षरशः अपनाते हुए जो संस्कार संजोये हैं, वही इस भव्य आयोजन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए।

हाल ही में चिरंजीवी दिव्यांश का विवाह रितिशा के साथ अत्यंत भव्यता एवं गरिमा के साथ उदयपुर (राज.) में सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न नगरों से लगभग 800 अतिथि इस पावन अवसर के साक्षी बने। परंतु इस समारोह की विशेषता केवल इसकी भव्यता नहीं, बल्कि इसकी सादगी, मर्यादा और धर्मनिष्ठा रही।

विशेषताएँ जो इसे अद्वितीय बनाती हैं :

❇ संपूर्ण आयोजन में फूलों की सजावट का त्याग, जिससे अनावश्यक हिंसा से बचाव हुआ, आतिशबाज़ी एवं अन्य आडंबरों से पूर्ण विरक्ति!

❇ आध्यात्मिकता का अनुपम दृश्य : तीन दिवसीय इस समारोह में प्रतिदिन प्रातःकाल सभी अतिथियों को सामायिक हेतु आमंत्रित किया गया। द लोटस काउंटी के विशाल सभागार में लगभग 300 श्रद्धालुओं ने एक साथ सामायिक कर ऐसा दिव्य वातावरण निर्मित किया, जो मन को आत्मिक शांति से भर देने वाला था।

❇ विशेष रूप से, लगभग 30-35 श्रावक- श्राविकाओं द्वारा वर्षीतप एवं अन्य तप साधनाएँ करते हुए, उन्हें मर्यादा अनुसार आवश्यक सभी व्यवस्थाएँ विनम्रता और श्रद्धा के साथ उपलब्ध कराई गईं।

❇ तपस्वियों के प्रति विशेष संवेदना : पूरे आयोजन में तपस्वियों के लिए शुद्ध एवं मर्यादित जल व्यवस्था अत्यंत सावधानी से की गई, जिससे उनकी साधना में कोई व्यवधान न आए।

❇ अहिंसायुक्त स्वच्छता व्यवस्था : भोजन उपरांत बर्तनों की सफाई 'बुरादे' (लकड़ी के चूरे) द्वारा एक समर्पित टीम के माध्यम से की गई - जो सूक्ष्म जीवों की रक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

❇ संयमित आहार व्यवस्था : प्रतिदिन सूर्यास्त से पूर्व सात्विक भोजन (रात्रि भोजन से पहले) की सुंदर एवं अनुशासित व्यवस्था की गई, जिससे जैन मर्यादाओं का पूर्ण पालन सुनिश्चित हुआ।

इस सम्पूर्ण उत्सव में ऐसा कोई भी कार्य दृष्टिगत नहीं हुआ जो जैन सिद्धांतों के विरुद्ध हो। हर छोटी से छोटी व्यवस्था में धर्म, संयम और सजगता का अद्भुत समन्वय देखने को मिला।

जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से इस अनुकरणीय आयोजन की अनुमोदना!

- डॉ. सुधीर हरबंस लाल जैन (राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली)

(पृष्ठ 2 का शेष)

2. समाज से जुड़ाव बना रहता है-अपने लोगों के बीच सुरक्षित कॉलोनी में रहने से धर्म-संस्कार भी बने रहते हैं।

3. पलायन रुकेगा-रोजगार के लिए शहर आने वाले जैन परिवारों को आधार मिलेगा।

फंड की व्यवस्था - 25% का विचार : जैन समारोह, प्रतिष्ठा, महोत्सव में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। यदि उसका 25% हिस्सा भी 'जैन निर्धन आवास योजना' के लिए रखा जाए, तो हर साल सैकड़ों परिवारों को छत मिल सकती है।

यह धर्म भी है और समाज-सेवा भी। तीर्थंकरों ने हमेशा 'जीव दया' और 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' का संदेश दिया। निर्धन साधर्मिक की सहायता से बड़ा कोई धर्म नहीं।

सभी श्री जैन संघ ट्रस्टों से निवेदन है कि इस सुझाव पर गंभीरता से विचार-विमर्श करें। एक समिति बनाकर पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया जा सकता है। शुभ चिंतकों के विचारों से ही समाज आगे बढ़ता है।

(व्हाट्सएप ग्रुप से साभार)

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 14

नियंता भाव - नियंत्रण की जिद (गहन विस्तार)

कर्ताभाव जब कठोर हो जाता है, तो उसका अगला रूप है-नियंता भाव। कर्ता कहता है-"मैं कर रहा हूँ।", नियंता कहता है-"सब मेरे अनुसार होना चाहिए।", यहीं से संघर्ष गहराता है। यहीं से प्रमाद तीव्र होता है।

1. नियंता भाव का जन्म : जब व्यक्ति स्वयं को कर्ता मान लेता है, तो स्वाभाविक रूप से वह परिणाम को भी नियंत्रित करना चाहता है। उसे लगता है कि यदि उसने किया है, तो परिणाम भी उसके नियंत्रण में होना चाहिए। पर जीवन जटिल है। परिणाम अनेक कारकों से बनते हैं। जब वास्तविकता नियंत्रण से बाहर जाती है, तो भीतर तनाव उत्पन्न होता है।

2. नियंत्रण की मनोवैज्ञानिक जड़ : नियंता भाव का मूल कारण है-भय। अनिश्चितता का भय। असफलता का भय। छवि टूटने का भय। मन अनिश्चितता सहन नहीं कर पाता। इसलिए वह व्यवस्था बनाना चाहता है। वह भविष्य को सुनिश्चित करना चाहता है। यह इच्छा स्वाभाविक है। पर जब यह आग्रह बन जाए, तो प्रमाद जन्म लेता है।

3. नियंता भाव के संकेत : नियंता भाव की पहचान कैसे करें? 'दूसरों के निर्णय पर असहजता', 'परिणाम में छोटा परिवर्तन भी अस्थिर कर दे', 'हर स्थिति में अंतिम शब्द कहने की इच्छा', 'छोटी भूल पर तीव्र प्रतिक्रिया', 'यदि इन संकेतों को देखें, तो समझें कि नियंत्रण की जिद सक्रिय है।

4. संबंधों में नियंता भाव : नियंता भाव संबंधों को कठोर बना देता है। व्यक्ति सोचता है-"मैं तुम्हारे लिए सही जानता हूँ।", धीरे-धीरे मार्गदर्शन नियंत्रण में बदल जाता है। प्रेम के भीतर हस्तक्षेप प्रवेश कर जाता है। जहाँ स्वतंत्रता नहीं है, वहाँ संबंध जीवित नहीं रह सकते।

5. नेतृत्व और नियंता भाव : नेतृत्व में दिशा देना आवश्यक है। परंतु यदि दिशा जिद बन जाए, तो संगठन तनाव में आ जाता है। सच्चा नेतृत्व विश्वास पर चलता है। नियंता नेतृत्व भय पर। विश्वास हल्कापन देता है। भय कठोरता लाता है।

6. शरीर में नियंत्रण : जब व्यक्ति सब नियंत्रित करना चाहता है, तो शरीर भी सख्त हो जाता है। जबड़े कसे हुए। छाती तनी हुई। श्वास नियंत्रित। नाभि में कसाव। यह सब भीतर की जिद का शारीरिक रूप है।

7. नियंत्रण की सीमा : नियंता भाव की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह वास्तविकता से संघर्ष करता है। जीवन का बड़ा भाग हमारे नियंत्रण से बाहर है-दूसरों की सोच परिस्थितियाँ परिणाम समय जब व्यक्ति इस सत्य को स्वीकार नहीं करता, तो वह लगातार तनाव में रहता है।

8. नियंत्रण से सहयोग तक : नियंता भाव का उपचार त्याग नहीं है। वह दृष्टि परिवर्तन है। "सब मेरे अनुसार हो" से "जो हो रहा है, उसमें मैं सजग रहूँ" तक। यह परिवर्तन कठोरता को सहयोग में बदल देता है।

9. समर्पण की शुरुआत : समर्पण हार नहीं है। समर्पण वास्तविकता की स्वीकृति है। जब व्यक्ति देखता है कि वह संपूर्ण नियंत्रक नहीं है, तो भीतर एक नरमी आती है। यह नरमी सजगता को जन्म देती है।

10. अंतिम स्पष्टता : नियंता भाव कर्ताभाव की कठोर अभिव्यक्ति है। जहाँ नियंत्रण की जिद है, वहाँ प्रमाद सक्रिय है। जब नियंत्रण ढीला पड़ता है, तो श्वास गहरी होती है। छाती हल्की होती है। मन शांत होता है। अगले अध्याय में हम देखेंगे-परिणाम-आसक्ति और भविष्य-भय कैसे नियंता भाव को और मजबूत करते हैं।

❀❀❀

(क्रमशः)

इंस्टाग्राम एक बीमारी है, इससे बचें!

प्रस्तुति - अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री

मैने इंस्टाग्राम डिलीट कर दिया था क्योंकि ये मेरा बहुत समय ले रहा था। अभी जब मैंने दोबारा इंस्टाग्राम Install किया तो कुछ कंटेंट देखे जो कि सोसायटी के कुछ मुद्दों पर आधारित थे। अब इंस्टाग्राम या सोशल मीडिया की Algoritham ऐसी होती है कि वह आपको वही दिखाता रहता है जो आप कभी ना कभी Search कर चुके होते है। मैं ये सब इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि ये हमारी और हमारे परिवार से Related है। कुछ मुद्दे जो आजकल इंस्टाग्राम पर जबरदस्त तरीके से चल रहे हैं और जो आपके बच्चों को Influence कर रहे है:

1. क्या लड़की या लड़के के Body Count (कितने लोगों के साथ संबंध) का आपके ऊपर फर्क पड़ता है अगर आप शादी करना चाहते है?
2. लड़कियाँ ही अपना घर क्यों छोड़ती है, लड़के तो शादी के बाद घर नहीं छोड़ते?
3. शादी मत करो, घूमो फिरो ऐश करो (ज्यादातर लड़कियों के लिए)
4. छोटे कपड़े पहन कर मंदिर जाने में क्या हर्ज है? भगवान में श्रद्धा होनी चाहिए।
5. जब मंदिर में गुंडे, बलात्कारी आ सकते है तो, मासिक धर्म वाली लड़कियाँ क्यों नहीं?
6. Why Society Pressurize Girls to Get Married Early (क्यों समाज लड़कियों के पीछे पड़ा हुआ है)

ऐसे ही अनेकों मुद्दे चलाए जा रहे हैं जिनकी वजह से आज की Generation खासकर लड़कियाँ भयंकर तरीके से Influence हो रही हैं। अपने माँ-बाप, समाज से अलग हो रही हैं। आप मानो या न मानो, लेकिन एक बार ऐसे किसी टॉपिक पर आप कमेंट कर दो, आपको ऐसी Reels उन्हीं मुद्दों पर दिखने लगेगी। आपका दिमाग काम करना बंद कर देगा और आप उसी को सच मान कर अपने फैसले लोगे।

मैं आप सभी से ये बात इसलिए Share कर रहा हूँ क्योंकि अपना समाज इन सब बातों से अछूता नहीं है। आज कितने ही परिवारों में लड़के-लड़कियाँ बाहर नौकरी कर रहे हैं। कितनो ने तो वहीं किसी अन्य समाज की लड़के-लड़कियों से विवाह कर लिया है। अगर आप उनसे बात करोगे तो वो इसी Mindset के मिलेंगे। मैं देख रहा हूँ कि आज 12-13 साल की लड़कियाँ इंस्टाग्राम पर फेमिनिज्म, My Body my choice, Shaadi, Body Count पर Reels बना रही हैं बिना उसके बारे में ज्यादा कुछ जाने।

इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि अपने बच्चों को इंस्टाग्राम जैसी बीमारी से थोड़ा दूर रहने को कहें। नहीं तो ये परिवार के साथ-साथ समाज को भी ले डूबेगी। मुझे पता है कि कुछ लोग इसको पढ़कर Ignore कर देंगे लेकिन उनको समझना होगा कि ये एक ऐसा जहर है जो एक बार आपके बच्चों के दिमाग में घुस गया तो बर्बादी के अलावा कुछ नहीं लेगा। - (व्हाट्सएप ग्रुप से साभार)

तप एवं दान के विसर्जन का अ-क्षय पर्व - अक्षय तृतीया

- पदमचन्द गांधी जैन

भारतीय संस्कृति में हर पर्व एवं हर त्यौहार एक विशेष संदेश लेकर जागृति उत्पन्न करता है। इन पर्वों में एक अनोखा पर्व है अक्षय तृतीया। जो न केवल तप एवं दान की महिमा को प्रकट करता है वरन् भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का लौकिक एवं अलौकिक महत्व को भी समझाता है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चंद्रमा की कलाओं की घटत-बढ़त के अनुसार तिथियाँ घटती बढ़ती रहती हैं, लेकिन अक्षय तृतीया ऐसी तिथि है जो कभी घटती बढ़ती नहीं है, इसलिए इसे आखातीज भी कहा गया है।

इस पर्व के प्रति सभी जाति, वर्ग, वर्ण, संप्रदाय और धर्म का आदर भाव अभिन्नता में एकता का प्रिय संदेश देता है। लौकिक महत्व के अनुसार यह अबूझ मांगलिक एवं शुभ दिन है। क्योंकि इस दिन बिना किसी मुहूर्त के विवाह एवं मांगलिक कार्य किए जाते हैं।

अलौकिक महत्व के अनुसार अक्षय तृतीया दान और तप के विसर्जन का संदेश लेकर आती है। व्यक्ति यदि संग्रह करता है किंतु विसर्जन नहीं करता है तो वह बीमारी से बच नहीं सकता। वह क्षय एवं क्षीण हो जाता है। अतः बाहर के संग्रह को दान से घटाया जा सकता है तथा भीतर के संग्रह को तप से।

अक्षय सुख को प्राप्त करने का मार्ग है तप। साधक को चेतना के स्थान पर अवस्थित होना है तो तप का मार्ग श्रेष्ठ है। क्योंकि तप जीव को ऊपर उठाने में सहायक होता है। तप द्वारा कषायों को कम किया जा सकता है, कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। आज कई तपस्वी वर्षों से एकांतर तप का पारणा करते है अर्थात् एक दिन उपवास एक दिन आहार इस प्रकार पूरे वर्ष यही क्रम तप के रूप में चलता है उसी के पारणे का दिवस है।

दान में सर्वश्रेष्ठ दान सुपात्र दान है जिसे श्रेयांश कुमार ने प्रभु ऋषभदेव को दिया, तब देवों ने आकाश में अहो दानम्, अहो दानम् का शंखनाद किया। अक्षय पथ पर यदि कोई अग्रसर होता है तो दान सबसे सुलभ रास्ता है। ममता के घटाने का यदि कोई मार्ग है तो वह केवल दान है। दान सुपात्र हो स्वार्थ रहित हो कामना रहित हो, अपने को हल्का करने की भावना से युक्त हो। अतः स्पष्ट है कि अक्षय सुख की ओर ले जाने वाला कोई उपाय है तो वह तप एवं दान ही है। वर्तमान समय में संत ही अक्षय सुख प्राप्ति की राह प्रशस्त करते हैं क्योंकि संत चरणों में आने वाले को जीवन निर्माण की प्रेरणा मिलती है।

मान्यताओं के अनुसार जिस प्रकार प्रभु ऋषभदेव ने असी, मसी और कृषि का निर्माण कर जीवन की नई राह प्रस्तुत की, इस परंपरा को निभाते हुए पुराने समय में इस दिन राजा अपने राजदरबार में किसानों को बुलाकर अगले वर्ष बुआई हेतु विशेष प्रकार के बीज उपहार मे देते थे, जिसकी मान्यता थी कि किसानों के धान्य कोठार कभी खाली नहीं रहे।

भविष्य पुराण एवं स्कंद पुराण के अनुसार आज के दिन रेणुका के गर्भ में भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया। इसी दिन माँ गंगा, माँ अन्नपूर्णा का जन्म हुआ। प्रसंग यह भी आता है कि इसी दिन द्रोपदी का चीर हरण हुआ जिसे श्रीकृष्ण ने बचाया। इसी दिन श्रीकृष्ण सुदामा का मिलन हुआ जो मित्रता की अनोखी मिसाल है। आज ही के दिन कुबेर को धन का खजाना प्राप्त हुआ इसलिए कुबेर की भी पूजा करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट अक्षय तृतीया तप और दान के विसर्जन का अ-क्षय संदेश देने के साथ-साथ भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के अनूठे संगम का दिवस भी है।

(लेखक साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी है।)

बुजुर्गों को बोलने दें : यही है मानसिक स्वास्थ्य का मंत्र

- मोनिका सुरेशचंद जैन

बुजुर्ग लोग जब ज्यादा बात करते हैं तो अक्सर उनका मजाक उड़ाया जाता है, लेकिन डॉक्टर इसे एक आशीर्वाद मानते हैं। डॉक्टर कहते हैं कि सेवानिवृत्त (सीनियर सिटीजन) लोगों को अधिक बात करनी चाहिए क्योंकि वर्तमान में स्मृति हानि (Memory Loss) को पूरी तरह रोकने का कोई तरीका नहीं है। इसे धीमा करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है - अधिक बात करना। वरिष्ठ नागरिकों के अधिक बोलने के कम से कम 3 लाभ हैं।

पहला लाभ : बात करना मस्तिष्क को सक्रिय करता है, क्योंकि भाषा और विचार एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। विशेष रूप से जब तेजी से बोलते हैं, तो यह स्वाभाविक रूप से सोचने की गति बढ़ाता है और याददाश्त में सुधार करता है। जो वरिष्ठ नागरिक कम बोलते हैं या मौन रहते हैं, उनमें स्मृति हानि होने की संभावना अधिक होती है।

दूसरा लाभ : अधिक बात करने से तनाव कम होता है, मानसिक बीमारियों की संभावना घटती है और मन हल्का रहता है। अक्सर लोग अपनी भावनाओं को दिल में दबाकर रखते हैं, जिससे घुटन और असहजता महसूस होती है। इसलिए बड़ों को अधिक बोलने और अपनी बात कहने का अवसर देना बेहतर है।

तीसरा लाभ : बोलना चेहरे की सक्रिय मांसपेशियों का व्यायाम करता है, गले को सक्रिय रखता है, फेफड़ों की क्षमता बढ़ाता है और चक्कर (वर्टिगो) तथा सुनने की समस्याओं के छिपे हुए खतरों को कम करने में मदद करता है, जो आँखों और कानों को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

एक सेवानिवृत्त व्यक्ति या वरिष्ठ नागरिक के रूप में, अल्जाइमर से बचाव का महत्वपूर्ण तरीका है - अधिक से अधिक लोगों से बात करना और सक्रिय रूप से सामाजिक संपर्क बनाए रखना।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

उदयपुर (राजस्थान) : बेटियाँ घर की लक्ष्मी होती हैं। उनके सशक्तिकरण और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत महिला शाखा द्वारा आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 7 अप्रैल को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रावला बेदला में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन के द्वारा सभी के साथ की ध्वनि के उच्चारण से की गई, जिससे वातावरण में शांति और सकारात्मकता का संचार हुआ। महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर ने बालिकाओं को आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने और अनुशासन की महत्ता के बारे में प्रेरित किया।

इस अवसर पर Marcos Academy के श्री एम.एल. सालवी एवं ताराजी ने सभी बालिका विद्यार्थियों को सरल तकनीक के माध्यम से आत्मरक्षा के तरीके सिखाए तथा गुड टच बैड टच के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने बालिकाओं को यह प्रेरणा दी कि हर लड़की को अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं सजग और सक्षम होना चाहिए और इसके लिए उन्होंने बहुत से गुर सीखायें।

कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं में आत्मविश्वास, जागरूकता और अपनी सुरक्षा के प्रति सजगता बढ़ाना था, ताकि वे जीवन में हर परिस्थिति का साहसपूर्वक सामना कर सकें। महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर ने विद्यालय के प्रिंसिपल, उपप्रधानाध्यापक, शिक्षकों तथा उपयोगी प्रशिक्षण के लिए आभार व्यक्त किया। यह सराहनीय पहल जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान महिला शाखा द्वारा समाज में बालिकाओं के सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है।

साध्वी मण्डल के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस

राजस्थान महिला शाखा ने किया तपस्वियों का सम्मान

दिवाकर स्वाध्याय भवन में आयोजित कार्यक्रम में वर्षीतप और मासखमण तपस्वियों का अभिनंदन

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : 10 अप्रैल को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान महिला शाखा ने वर्षीतप की कठोर तपस्या कर रहे श्रावक-श्राविकाओं एवं गुरु भगवंतों की अनुमोदना में तीर्थंकर आराधना प्रभु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूज्य मंजूलज्योति म.सा. आदि ठाणा 5, अनुष्ठान आराधिका पूज्य महासाध्वी कुमुदलता म.सा. आदि ठाणा 4, तपस्वी रत्ना महासाध्वी प्रतिभाश्री म.सा. आदि ठाणा 4, महासाध्वी शीतलज्योति म.सा. आदि ठाणा 2 के सान्निध्य में किला रोड़ स्थित दिवाकर स्वाध्याय भवन में जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा खोखावत जैन एवं कोषाध्यक्षा श्रीमती अंगुरबाला भड़कत्या जैन के नेतृत्व में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वर्षीतप की साधना करने वाले और चातुर्मास काल में मासखमण की तपस्या करने वाले 16 श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान अभिनंदन किया गया। समारोह में जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा परिवार एवं श्रमण संघ के विभिन्न मंडलों की 250 से अधिक श्राविकाएं मौजूद थीं।

अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय श्री कन्हैयालाल म. 'कमल' की 113वीं जयंती

सिन्धनूर (कर्नाटक) : प्रवर्तक पूज्य श्री रूपचंद म. के शिष्य, मरूधरा भूषण प्रवर्तक श्री सुकनमुनि म.सा. के आज्ञानुवर्ती युवा तपस्वी श्री मुकेशमुनि म.सा. आदि ठाणा 4 विहार यात्रा के तहत शुक्रवार को गोरेबाल से विहार कर कर्नाटक के रायचूर जिले के सिन्धनूर पहुँच गए। उनके साथ ही महासाध्वी चेतनाश्री म.सा. आदि ठाणा 2 का भी मंगल प्रवेश हुआ।

सिन्धनूर श्रीसंघ के तत्वावधान में परम पूज्य अनुयोग प्रवर्तक पंडित रत्न श्री कन्हैयालाल म.सा. 'कमल' की 113वीं जयंती श्रद्धाभाव से मनाई गई। इस अवसर पर पूज्य श्री मुकेशमुनि म.सा. एवं सेवारत्न श्री हरीषमुनि म.सा. ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि वह जीवात्मा धन्य हो जाती है जो आत्मकल्याण के लिए संयम के पथ पर कदम बढ़ाती है। उन्होंने पूज्य श्री कन्हैयालाल म. के जीवन चरित्र की चर्चा की।

महावीर जयंती पर शब्दों का महासंगम

भगवान महावीर ज्ञान सेवा समिति द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

नई दिल्ली : महावीर जयंती के पावन अवसर पर राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित गोल्डन क्राउन बैंक्वेट हॉल में भगवान महावीर ज्ञान सेवा समिति, दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन 'शब्दों का उत्सव, भावों का संगम' में साहित्य, संस्कृति और आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में शुरुआत से ही श्रोताओं का उत्साह देखते ही बनता था और हॉल खचाखच भरा रहा। देर रात तक चले इस भव्य आयोजन में दिल्ली, हरियाणा एवं आस-पास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग पहुँचे, जिससे कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हुआ। मंच पर प्रख्यात कवि डॉ. हरिओम पंवार ने अपनी राष्ट्रभाव से ओत-प्रोत रचनाओं से वातावरण को ऊर्जावान बना दिया। वहीं दिनेश रघुवंशी, प्रवीण शुक्ला, शशि श्रेया और आदित्य जैन ने भी अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का संचालन ललित ओसवाल जैन ने गरिमामयी शैली में किया।

कार्यक्रम में समारोह अध्यक्ष के रूप में श्री विजय जैन (राष्ट्रीय चेयरमैन, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली), स्वागताध्यक्ष श्री सुभाष जैन एवं श्री पुनीत जैन (बहादुरगढ़ वाले), ध्वजारोहणकर्ता श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन (अध्यक्ष, जैन महासंघ, दिल्ली प्रदेश), दीप प्रज्वलनकर्ता श्री भूपेंद्र जैन (शालीमार बाग) एवं भगवान महावीर दरबार के अनावरणकर्ता श्री अतुल बोकरिया जैन (पूर्व राष्ट्रीय कानूनी सलहाकार मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर श्री सुभाष ओसवाल जैन डॉ. अमितराय जैन, श्रीमती संतोष सुरेश जैन, श्री जितेंद्र जैन, श्री विपुल जैन सहित जैन कॉन्फ्रेंस के अनेक पदाधिकारी एवं समाज जन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

नेपाल हिन्द गौरव डॉ. मणिभद्रमुनि जी म. का चातुर्मास दुर्ग में घोषित

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : नेपाल से उग्र विहार कर बनारस के रास्ते होते जबलपुर में विराजमान जैन संत डॉ. मणिभद्रमुनि म. अपने साधु-साध्वी समुदाय के साथ चातुर्मास के लिए दुर्ग छत्तीसगढ़ पधार रहे हैं। जैन संत की आगवानी करने श्रमण संघ परिवार का युवा संगठन छत्तीसगढ़ युवा श्रमण संघ का तीस सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल डॉ. पूज्य गुरुदेव श्री मणिभद्र मुनि महाराज, श्री पुनितमुनि महाराज, श्री सुद्देशमुनि महाराज, प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी श्री लक्ष्मी महाराज, तप चंद्रिका महासाध्वी श्री वैशाली महाराज साहब, महासाध्वी डॉ. सृजना महाराज के दर्शन वंदन का लाभ लिया।

आज गुरुदेव श्री मणिभद्र मुनि का जन्मोत्सव जबलपुर जैन संघ और छत्तीसगढ़ युवा श्रमण संघ परिवार के साथ एकासना दिवस के साथ मनाया गया जहाँ 130 सदस्यों ने जैन दादाबाड़ी में एकासना तप की आराधना की। छत्तीसगढ़ युवा श्रमण संघ के बैनर तले टीकम छाजेड़, राकेश संचेती, अनिल कुचेरिया, अशोक रतन बोहरा, प्रकाश कांकरिया, योगेश पारख, विक्रम पारख सहित श्रमण संघ स्वध्याय मंडल के सदस्यों का दल गुरु दर्शन यात्रा में सम्मिलित हुआ। प्रेषक : नवीन संचेती जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

नवपद आयंबिल ओली तपाराधना में 132 आराधकों ने किया कठोर तप

13 आराधकों ने 9 दिन केवल उड़द से निर्मित सामग्री ग्रहण कर किया आयंबिल

रतलाम (मध्य प्रदेश) : नौ दिवसीय एक वरण (पदार्थ) की नवपद आयंबिल ओली तपाराधना का आयोजन पूर्ण हुआ। इस तप आराधना में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी बड़ी संख्या में आराधकों ने शामिल होकर आराधना करने का लाभ लिया। रसेंद्रिय पर नियंत्रण करनेवाला ही यह तप आराधना कर सकता हैं। रतलाम शहर में इस आराधना पर्व पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट बोर्ड के तत्वावधान में आयंबिल शाला धनजी भाई के नोहरे में आयोजित ओलीजी आराधना पर्व के अंतर्गत 132 आराधकों ने ओलीजी की आराधना की। 13 आराधकों ने नौ दिन केवल उड़द वरण से निर्मित खाद्य सामग्री ग्रहण कर आयंबिल किया। जो अनुकरणीय, अनुमोदनीय, साधुवाद योग्य हैं। इस 'वरण' की आराधना में जैन धर्म के ध्वज के रंग अनुसार वरण की खाद्य सामग्री निर्मित की जाती हैं। पहले दिन चावल, दूसरे दिन गेहूँ, तीसरे दिन चना, चौथे दिन मूंग, पाँचवे दिन उड़द एवं शेष चार दिन चावल से अर्थात् प्रतिदिन निर्धारित केवल एक ही अन्न से निर्मित (घी, तेल, दूध, दही, शकर, नमक, मिर्च, मसाला आदि रहित) मात्र उबला व सीका हुआ भोजन एक ही बैठक पर ग्रहण किया।

आयंबिल करवाने का पूरा लाभ सुशील कांतिलाल गोरेचा एवं किरणबेन मदनसिंह मेहता परिवार ने लिया। बहुमान समारोह में ट्रस्टीगण प्रकाश मूणत, रंगलाल चोरड़िया, विनोद भंडारी एवं कांतिलाल छाजेड़ के विशेष आतिथ्य एवं सान्निध्य में तप आराधकों का बहुमान समारोह आयोजित किया गया। प्रेषक : दिलीप दर्डा जैन

पंचम जोन युवा एवं महिला शाखा द्वारा आयुर्वेदिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

थेरगांव (महाराष्ट्र) : रविवार, 29 मार्च 2026 को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, थेरगांव तथा श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (पंचम ज़ोन) युवा शाखा एवं महिला शाखा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भव्य आयुर्वेदिक एवं स्वास्थ्य शिविर, भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रत्येक रक्तदाता को आकर्षक उपहार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

इस शिविर के दौरान निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच सेवाएँ, कैंसर कीमोथेरेपी, एंजियोप्लास्टी की गई। 71 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया, 40 लोगों को निःशुल्क चश्मों का वितरण हुआ, 53 लोगों की निःशुल्क ECG जाँच हुई, 198 लोगों की BMI जाँच हुई, लगभग 330 लोगों का संपूर्ण बॉडी चेकअप हुआ।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लोकप्रिय सांसद मा. श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष श्री अशोक पगारिया जैन, वर्तमान अध्यक्ष श्री श्रेयस पगारिया जैन, कार्याध्यक्ष मा. श्री विजय बिलावडे, पूर्व अध्यक्ष मा. श्री उमेश पाटील, नगरसेविका सौ. मायाताई बारणे, नगरसेवक मा. श्री शीतलदादा शिंदे, नगरसेविका सौ. शालिनी ताई गुजर, राष्ट्रवादी के युवा नेता श्री प्रवीण नानाभाऊ बारणे, नितिन बेदमुथा-प्रांतीय अध्यक्ष, कल्पना कर्णावट-प्रांतीय महिला अध्यक्षा, देवेंद्र पारख -प्रांतीय युवा अध्यक्ष तथा अन्य अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

प्रेषक : देवेन्द्र पारख जैन

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

महासाध्वी श्री जनक जी म.सा. का देवलोकगमन

लुधियाना (पंजाब) : महासाध्वी सरल आत्मा पूज्य गुरुणा महिंदर कुमारी जी महाराज की सुशिष्या महासाध्वी पूज्य गुरुणी श्री जनक जी महाराज का 12 अप्रैल को देवलोकगमन हो गया है। गुरुणा जी के अंतिम दर्शनो के लिए सुन्दरनगर जैन स्थानक में पधारे महाराज जी की अंतिम यात्रा सुन्दर नगर जैन स्थानक से गौशाला रोड गऊघाट के लिए रवाना हुई।

प्रेषक : मंत्री एस.एस. जैन सभा सुन्दरनगर, लुधियाना

वरिष्ठ समाजसेवी सरदारमल कांकरिया जैन का देवलोकगमन

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता के अध्यक्ष और वरिष्ठ समाजसेवी श्री सरदारमलजी कांकरिया जैन का 11 अप्रैल 2026, शनिवार को कोलकाता में 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया। ऐसे निष्काम कर्मयोगी को शत् शत् नमन!

प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग

सुश्रावक श्री महावीरचंद कटारिया जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : परम पूज्य गुरुदेव श्रमण सूर्य प्रवर्तक मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज साहब के अनन्य गुरु भक्त, सुश्रावक श्री महावीरचंद कटारिया जैन (सुपुत्र स्व. श्री बिसनलाल कटारिया जैन) मूल निवासी सेहवाज, मरुधर का 14 अप्रैल को स्वर्गवास हो गया।

प्रेषक : गुरु मरुधर केसरी ग्रुप

श्रीमती सुलोचनादेवी डाफरिया जैन का स्वर्गवास

सिकन्दराबाद (तेलंगाना) : श्रीमती सुलोचनादेवी डाफरिया जैन धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाबचंद डाफरिया जैन का 75 वर्ष की उम्र में 9 अप्रैल को स्वर्गवास हो गया।

आप जैन कॉन्फ्रेंस की तेलंगाना प्रांतीय युवा शाखा के प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री श्रेणिकराज जैन की माताजी हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

विश्व नवकार दिवस का आयोजन

दिल्ली : 9 अप्रैल को जैन समाज की मान्य संस्था जीतो द्वारा विश्व नवकार दिवस का शुभारंभ माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा विज्ञान भवन में किया गया। इस अवसर पर हजारों जैन श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशेष रूप से जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा श्रीमती संगीता जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्रीमती पारुल जैन, प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, राष्ट्रीय महिला चेयरमैन श्रीमती प्रेमा सुराना जैन को भी वहाँ उपस्थित रही।

प्रेषक : संतोष सुरेश जैन

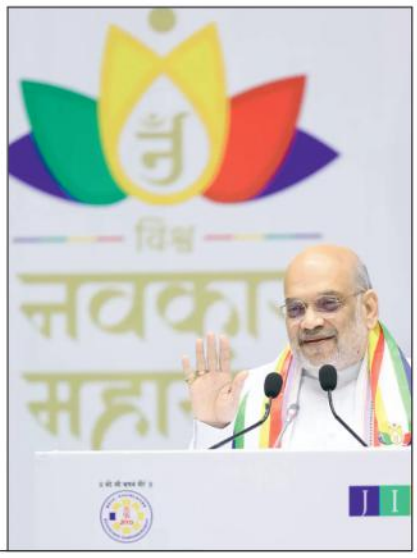

महासती श्री अरुणप्रभा जी के 500 आयम्बिल तप की दीर्घ तपस्या

श्रमण संघीय, आयम्बिल आराधिका, उपप्रवर्तनी महासती श्री अरुणप्रभा जी म. के आयम्बिल तप की दीर्घ तपस्या निरंतर गतिमान है, इसी क्रम में आगामी 17 मई 2026 रविवार को पूज्या गुरुणी जी के 500 आयम्बिल तप पूरे हो रहे हैं। इस महान तप की अनुमोदनार्थ हम सभी उस दिन एक-एक आयम्बिल कर महासती जी के तप की अनुमोदना करेंगे।

निवेदक : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब द्वारा आयोजित प्रभु महावीर भक्ति उत्सव ने उत्तर भारत के जैन समाज में छोड़ी अमिट छाप

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब जोन 2 द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर प्रभु महावीर भक्ति उत्सव का भव्य आयोजन गुरु नानक देव भवन, फिरोजपुर रोड, लुधियाना में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक वैभव बागमार ने जहाँ प्रभु महावीर का गुणगान किया, वहीं जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब के सदस्य युवक-युवतियों ने मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मैसर्स गायेम स्क्रू प्रेस के श्रीमती कांता जैन, विनोद जैन, आशी जैन उपस्थित रहे तथा समारोह अध्यक्ष मानव रत्न श्री रामकुमार जैन, राकेश जैन 'शॉल' परिवार थे। गौतम प्रसादी का लाभ विपन जैन, सुनीता जैन, मानिक जैन, पावन जैन, श्रमण जैन स्वीट्स परिवार ने लिया। ध्वजारोहण एस.एस. जैन सभा सिविल लाईंस लुधियाना के चेयरमैन जतिन्द्र जैनश्रमण, प्रधान अरिदम जैन व अन्य पदाधिकारियों ने किया। जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दीपांशु जैन, प्रांतीय युवा मार्गदर्शक राजीव जैन, प्रांतीय युवा अध्यक्ष विनय जैन, चेयरमैन कुणाल जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रोहित जैन, महामंत्री गौश्रव जैन, कोषाध्यक्ष जिनेश जैन ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए अपनी समस्त टीम व लाभार्थी परिवारों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कहा कि पंजाब युवा शाखा द्वारा आयोजित करवाया गया यह कार्यक्रम जैन समाज में अमिट छाप छोड़ गया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय बॉडी से श्री संजीव हीरालाल जैन, श्री राज जैन, श्री राकेश जैन 'लक्की', श्री गण जैन, श्री मंधीर जैन, श्री विपुल जैन, श्रीमती संतोष सुरेश जैन, श्रीमती रीचा संदीप जैन के अलावा भारी जनसमूह मौजूद थे। प्रेषक : विनय जैन

उवस्सगहरं स्तोत्र का मंहामगलकारी अनुष्ठान संपन्न

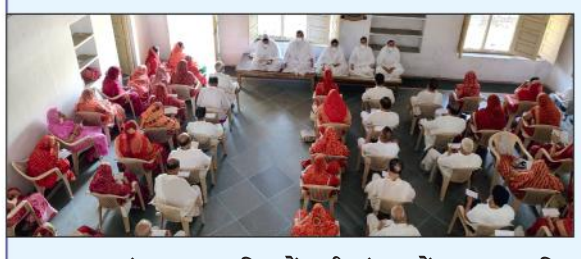

चित्तौड़गढ़ राजस्थान में 12 अप्रैल को श्रमण संघीय उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री मंजुल ज्योति म.सा. आदि ठाना के सान्निध्य में स्थानीय जैन सामायिक भवन मीरानगर में रविवार प्रातः पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति उवस्सगहरम स्तोत्र का मंहामगलकारी अनुष्ठान संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। - पवन पटवारी

नेत्र परीक्षण शिविर में 125 रोगियों की जाँच

जावरा (निप्र) : जैन दिवाकर नवयुवक मंडल द्वारा युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन दिवाकर लाभमुनि नेत्र चिकित्सालय मंदसौर के सहयोग से निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का शुभारंभ युवाचार्य महेन्द्रऋषि म.सा. के मंगलाचरण के पश्चात् प्रारंभ किया गया, जिसमें लगभग 125 से अधिक लोगों ने नेत्र परीक्षण करवाए। शिविर में नवयुवक मंडल के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरान शिविर में जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री संदीप रांका जैन, महामंत्री महावीर छाजेड़ जैन, आकाश जैन, पारसमल बरडिया, बसंतीलाल चपडोद, दीपचंद डांगी, सुरेन्द्र मेहता, अंशुल मेहता, चिंतन टुकडिया, मनोज डांगी, राहुल रांका, तरुण टुकडिया, राहुल गादिया, प्रीतेश कोचट्टा, पराग कोचट्टा, राकेश जैन, उज्जवल भंडारी, महेन्द्र रांका, सुभाष ओस्तवाल, अशोक भंडारी आदि उपस्थित थे। धर्मसभा का संचालन महामंत्री महावीर छाजेड़ ने किया। - प्रेषक : संदीप रांका जैन

महाराष्ट्र के राजभवन में महामहिम राज्यपाल से की भेंट

मुंबई (महाराष्ट्र) : 8 अप्रैल 2026 को महाराष्ट्र राजभवन में महामहिम राज्यपाल श्री विष्णुदेव वर्मा से केंद्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री श्री रामदास आठवले के साथ जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर ने भेंट कर सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा की।

जैन दिवाकर कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण

राजस्थान के चित्तौड़ रेलवे स्टेशन मार्ग पर श्रमण संघ के महान संत जैन दिवाकर गुरुदेव पूज्य श्री चौथमल जी महाराज स्तंभ का लोकार्पण माननीय विधायक महोदय चंद्रभान सिंह एवं महासती पूज्य श्री कुमुदलता महाराज आदि ठाणा चार के सान्निध्य में संपन्न हुआ। स्तंभ के चारों ओर जैन दिवाकर पूज्यश्री चौथमल जी महाराज का जीवन दर्शन, उनके विचार और जैन धर्म की शिक्षाओं को अंकित किया गया है। जिससे यहाँ इस मार्ग पर आने वाले राहगीरों को भगवान महावीर के जीवन संदेश और जैन धर्म के महान संतों की परंपरा की जानकारी प्राप्त होगी।

जैन कॉन्फ्रेंस पंजाब युवा शाखा द्वारा मानव सेवा के अंतर्गत लंगर सेवा

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब की ओर से 7 मार्च को लॉर्ड महावीर सिविल हॉस्पिटल, फील्ड गंज, लुधियाना में मानव सेवा के तहत लंगर सेवा कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस सेवा कार्य में अस्पताल में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों के साथ-साथ ओपीडी में आए मरीजों को भी प्रेमपूर्वक भोजन वितरित किया गया।

इस पुण्य कार्य के लाभार्थी परिवार श्री नरेश जैन-श्रीमती पूनम जैन, श्री हर्षवर्धन जैन-श्री नंदीवर्धन जैन रहे। लाभार्थी परिवार से इस अवसर पर श्री नरेश जैन, श्रीमती पूनम जैन, श्री सुनील जैन, श्रीमती बबीता जैन, श्री हर्षवर्धन जैन एवं श्रीमती आशिमा जैन विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने स्वयं सेवा कार्य में भाग लेकर इस आयोजन को और भी प्रेरणादायक बनाया।

इस अवसर पर युवा शाखा से उपस्थित प्रमुख सदस्यों में - श्री विनय जैन, श्री राजीव जैन, श्री हर्षवर्धन जैन, श्री जिनेश जैन, श्री राहुल जैन एवं श्री लक्की जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी सदस्यों ने जैन धर्म के मूल सिद्धांत "जीव दया एवं मानव सेवा" को अपनाने का संदेश दिया। अंत में आयोजकों द्वारा सभी सहयोगियों एवं सेवा में भाग लेने वाले सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया। प्रेषक : विनय जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)
Date of Publication : 15-04-2026
Date of Posting : 21/22-04-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com
भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 7
पृष्ठ : 8 ✲ माह : अप्रैल ✲ सप्ताह : 15 से 21
मूल्य : ₹ 10
सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

पसरूर में मुनि श्री खजानचंद जी महाराज की समाधि

मुस्लिम समुदाय द्वारा 'हजरत खजांची सरकार की दरगाह' के रूप में की गई है संरक्षित !

स्थानकवासी जैन परंपरा के प्रख्यात मुनि श्री खजानचंद जी महाराज का जीवन त्याग, साधना और समाज सुधार का अद्वितीय उदाहरण रहा है। आप जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के शिष्य थे और अपने गुरु की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए धर्म प्रचार एवं सामाजिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुनि श्री खजानचंद जी का जन्म ईस्वी सन् 1883 में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। अल्पायु में ही उनमें वैराग्य की भावना जागृत हो गई और उन्होंने सन् 1903 में गुजरांवाला में आचार्य श्री आत्माराम जी से दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के उपरांत उन्होंने जैन आगमों का गहन अध्ययन किया और अपने ज्ञान, सरलता तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व के माध्यम से समाज में धर्म के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। वे केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक ही नहीं थे, बल्कि एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने रूढ़ियों और कुप्रथाओं का विरोध किया, विशेषकर महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया तथा विद्यालयों की स्थापना के लिए प्रेरित किया।

सन् 1945 में पसरूर (वर्तमान पाकिस्तान) में उनके देहावसान के उपरांत जैन समाज ने श्रद्धापूर्वक उनकी समाधि का निर्माण कराया। यह स्थान उस समय जैन समाज की आस्था और श्रद्धा का केंद्र था, जहाँ साधु-संतों का निवास भी होता था। समय के साथ ऐतिहासिक परिस्थितियों, विशेषकर भारत-विभाजन के बाद, इस क्षेत्र की सामाजिक और धार्मिक संरचना में परिवर्तन आया।

आज यह स्थल "हजरत बाबा खजांची सरकार" के नाम से जाना जाता है। स्थानीय मुस्लिम समुदाय इसे एक पवित्र दरगाह के रूप में मानता है और बड़ी श्रद्धा से वहाँ आता है। यह परिवर्तन केवल नाम का नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है जहाँ एक ही स्थान विभिन्न आस्थाओं के लोगों के लिए श्रद्धा का केंद्र बन गया।

विशेष बात यह है कि यह स्थान कभी जैन साधुओं के ठहरने का स्थान था और जैन समाज द्वारा निर्मित "स्थानक-भवन" के रूप में जाना जाता था। बाद में स्थानीय लोगों ने इसे अपने धार्मिक संदर्भ में अपनाया, किंतु इसकी मूल ऐतिहासिक पहचान जैन परंपरा से जुड़ी हुई है। इस प्रकार यह स्थल भारतीय उपमहाद्वीप की साझा विरासत, सह-अस्तित्व और धार्मिक समन्वय का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुनि श्री खजानचंद जी महाराज की समाधि आज भी हमें यह संदेश देती है कि संतों की महानता किसी एक धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं होती। उनका जीवन और उनकी स्मृतियाँ समय और सीमाओं से परे जाकर मानवता को जोड़ने का कार्य करती हैं।

प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत

(क्रमशः)

जैन गौरव

अमर शहीद वीर उदयचन्द जैन

उदयचन्द जैन का जन्म 10 नवम्बर 1922 को हुआ। आपके पिता सेठ त्रिलोकचन्द जैन एवं माता श्रीमती खिलौनाबाई थीं। उदयचन्द की प्रारम्भिक शिक्षा महाराजपुर (मंडला) मध्यप्रदेश में हुई। 1936-37 में अध्ययन के लिए जगन्नाथ हाईस्कूल मंडला में प्रवेश लिया। उदयचन्द मेधावी छात्र थे, नेतृत्व क्षमता के कारण छात्र-संघ के अध्यक्ष चुने गये। हॉकी उनका प्रिय खेल था, मित्रों में लोकप्रिय थे, अत्यन्त मितव्ययी, ओजस्वी वक्ता और प्रायः मौन रहनेवाले थे।

आजादी की लड़ाई 1933 में उग्र रूप धारण कर लिया था। पूज्य बापू और नेताजी सुभाषचन्द बोस ने आन्दोलन को और अधिक गतिमान बना दिया। 1942 के आन्दोलन ने सारे देश को झकझोर दिया, 'करो या मरो' का नारा बुलंद हुआ। मंडला शहर भी उग्र हो गया, विद्यालय के छात्रों ने हड़ताल कर दी। सब ओर पुलिस फैल गई। हवा में गोलियाँ चलाकर आतंक फैलाने लगी। 15 अगस्त 1942 नर्मदागंज में जुलूस प्रारम्भ होनेवाला था। जुलूस बहुत बड़ा था, मंडला शहर के क्रांति के सेनानियों के साथ-साथ उदयचन्द भी नेतृत्व कर रहे थे। जुलूस शांतिपूर्ण चल रहा था। उपजिलाधीस ने गोली चलाने का आदेश दिया, उदयचन्द ने कमीज फाड़कर छाती खोल दी। पुलिस को ललकारा चलाओ गोली, भारत माता की जय, गोली चली पेट फाड़ते हुए शरीर में घुस गई। मंडला और आसपास के इलाकों में तहलका मच गया। 15 अगस्त रात्रि को तड़पते रहे, भारत माता की जय, भारतवर्ष आजाद होगा। नारे लगाते रहे, 16 अगस्त 1942 को प्रातः उदयचन्द वीर गति को प्राप्त हो गये। उदयचन्द मरकर भी अमर हो गये ।

उनकी कीर्ति को चिरस्थाई बनाने के लिए महाराजपुर में उदय चौक त्रिकोणाकार लाल लाट (पत्थर) का उदय स्तम्भ बना, उदय प्राथमिक विद्यालय बना, विद्यालय में प्रतिमा स्थापित की गई। महाराजपुर में समाधि स्थल पर प्रति वर्ष 16 अगस्त को मेला लगता है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

महावीर प्रश्नावली (भाग-3)

प्रश्न 11 : महावीर स्वामी ने तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन कौन से भव में किया ?
प्रश्न 12 : महावीर स्वामी के जीव ने 27 भवों में देव के कितन भव किये ?
प्रश्न 13 : महावीर स्वामी के जीव ने 27 मुख्य भवों में कितने मनुष्य के कितने तिर्यंच और कितने नरक के भव किये ?
प्रश्न 14 : महावीर स्वामी ने 27 भवों में कौन-कौन सी पदवियाँ प्राप्त की थी ?
प्रश्न 15 : महावीर स्वामी कौन से देवलोक से च्यवकर किसकी कुक्षि में आए थे ?

नोट : सही उत्तर देने वाले सौभाग्यशाली 4 प्रतिभागियों को रुपये 500/- की नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा एवं विजेताओं के नाम एवं प्रश्नों के सही उत्तर प्रत्येक जैन प्रकाश साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे ।

प्रायोजक : श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना

उत्तर भेजने हेतु संपर्क सूत्र - श्री नरेन्द्र जैन - राष्ट्रीय मंत्री ज्ञान प्रकाश योजना : 98101 63165

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की विविध योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

- जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना उच्च शिक्षा सहायता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना चिकित्सा सहायता फॉर्म
- मानव सेवा योजना (विधवा पेंशन) फॉर्म
- जीवदया योजना फॉर्म

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 1 मई : प्रवर्तक भण्डारी श्री पदमचंद जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 3 मई : आचार्य श्री रघुनाथ जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 6 मई : उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. - जन्म दिवस
दिनांक 7 मई : आचार्य सम्राट् डॉ. शिवमुनि जी म. - आचार्य पद ग्रहण दिवस
दिनांक 7 मई : प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 8 मई : प्रवर्तक श्री कुंदनऋषि जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 10 मई : आचार्य श्री काशीराम जी म. - स्मृति दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक 1 मई : बुद्ध पूर्णिमा
दिनांक 10 मई : मदर्स डे

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906